

**डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, धर्मशास्त्र, सत्र 4,
ट्रिनिटी पर ऐतिहासिक विचार, तीसरी शताब्दी और ऑगस्टीन का परिचय**
© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा धर्मशास्त्र या ईश्वर पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 4 है, ट्रिनिटी, तीसरी शताब्दी और ऑगस्टीन से परिचय पर ऐतिहासिक विचार।

हम त्रिएकत्व के ऐतिहासिक धर्मशास्त्र के साथ त्रिएकत्व के अपने अध्ययन को जारी रखते हैं और जेएनडी केली के प्रारंभिक ईसाई सिद्धांतों के साथ तीसरी शताब्दी के त्रित्ववाद की ओर बढ़ते हैं।

तीसरी शताब्दी में त्रित्ववादी विचारधारा में परस्पर विरोधी प्रवृत्तियों का उदय हुआ, जो बाद के विवादों के लिए सामग्री प्रदान करने वाली थी। अब तक ईसाई धर्मवाद का मुख्य ध्यान ईश्वर की एकता पर था। बुतपरस्ती और ज्ञानवाद के साथ संघर्ष ने इस लेख को अच्छी तरह से सामने ला दिया।

परिणामस्वरूप, जबकि धर्मशास्त्री एक अविभाज्य ईश्वरत्व के भीतर भेदों के बारे में अस्पष्ट रूप से जानते थे, उन्होंने तीनों के शाश्वत संबंधों का पता लगाने के लिए बहुत कम प्रवृत्ति दिखाई, उन्हें व्यक्त करने में सक्षम एक वैचारिक और भाषाई तंत्र का निर्माण करने के लिए तो और भी कम। प्रारंभिक पिताओं के प्रकार के आर्थिक त्रित्ववाद ने दूसरी शताब्दी के अंत और तीसरी शताब्दी की शुरुआत में अपने प्रतिपादकों को खोजना जारी रखा। हालाँकि, इसकी बहुत सफलता ने हलकों में एक शक्तिशाली प्रतिक्रिया को सामने ला दिया, जो लोगोस सिद्धांत से कतराते थे और संदेह करते थे कि रहस्योद्घाटन द्वारा प्रकट की गई त्रिगुणता पर बढ़ते जोर ने दिव्य एकता को खतरे में डाल दिया।

यह विचारधारा मुख्य रूप से पश्चिम में स्पष्ट थी। इसे मोनार्कियनिज्म कहा जाता था क्योंकि इसके अनुयायी, जैसा कि टर्टुलियन ने कहा था, अर्थव्यवस्था से डरते थे और राजशाही में शरण लेते थे। ग्रीक में मोनार्किया, वह स्वयंसिद्ध है कि सभी चीजों का एक दिव्य स्रोत और सिद्धांत है।

उसी समय, पूर्व में एक बिल्कुल विपरीत आंदोलन चल रहा था। इसने ईश्वर की स्पष्ट रूप से बहुलवादी अवधारणा का रूप ले लिया, जिसने एकेश्वरवाद के मूल सिद्धांत का त्याग किए बिना, ईश्वर के शाश्वत अस्तित्व के भीतर तीनों की वास्तविकता और भेद के साथ न्याय करने की कोशिश की। दूसरे शब्दों में, व्यक्तियों के रूप में उनके अस्तित्व के लिए।

हालाँकि यह पहली बार एलेक्जेंड्रिया से जुड़ा था, लेकिन इस नए दृष्टिकोण ने ग्रीक त्रित्ववाद पर और वास्तव में, सामान्य रूप से ईसाई सोच पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा। हिप्पोलिटस और टर्टुलियन, हमारा पहला काम दो धर्मशास्त्रियों पर विचार करना है जो कमोबेश सीधे तौर पर अपोलोजिस्ट और इरेनियस की पंक्ति में खड़े थे। वे रोमन कैथोलिक, रोमन एंटी-पोप और शहीद हिप्पोलिटस थे, जिनकी मृत्यु 235 में हुई थी, और उत्तरी अफ्रीकी टर्टुलियन लगभग 160 से 220 के बीच, या कुछ विद्वान 220 के आसपास कहते हैं।

अपने पूर्ववर्तियों की तरह, दोनों ने एकेश्वरवाद को बहुत महत्व दिया था, और अपनी ऊर्जा को गूढ़ द्वैतवाद के खंडन में लगाया था। उनके विचार कुछ मायनों में समान थे, लेकिन हिप्पोलिटस अधिक संक्षिप्त थे और उनमें अधिक पुरातन स्वाद था। टर्टुलियन का शानदार दिमाग अधिक स्थायी मूल्य का कथन तैयार करने में सक्षम था।

इरेनियस के बारे में उनकी शिक्षा का सुराग यह है कि इसे दो विपरीत दिशाओं से एक साथ देखा जाए, ईश्वर को ए, जैसा कि वह अपने शाश्वत अस्तित्व में मौजूद है और बी, जैसा कि वह सृजन और मोचन की प्रक्रिया में खुद को प्रकट करता है। बाद के लिए उन्होंने इरेनियस से जो व्यापक शब्द उधार लिया वह था अर्थव्यवस्था। ग्रीक, ओइकोनोमिया, लैटिन, डिस्पेंसटियो।

ईश्वरीय योजना या ईश्वर के गुप्त उद्देश्य के अर्थ से, यह शब्द ईसाई धर्मशास्त्र में अवतार, ईश्वरीय उद्देश्य के लक्ष्य के लिए लागू हुआ। हालाँकि, इसके मूल अर्थों में वितरण, संगठन, नियमित क्रम में कई कारकों की व्यवस्था या कर, ग्रीक शब्द शामिल थे, और इसलिए इसे पिता और पुत्र के भेद को दर्शाने के लिए विस्तारित किया गया था, पिता, क्षमा करें, ईश्वर की मुक्ति योजना, अर्थव्यवस्था के कार्यान्वयन में प्रकट एक पिता से पुत्र और आत्मा के भेद को दर्शाने के लिए। सबसे पहले, हिप्पोलिटस और टर्टुलियन दोनों ने ईश्वर की अवधारणा को अनंत काल से अद्वितीय एकांत में विद्यमान रखा था, फिर भी मनुष्य के मानसिक कार्यों, उसके तर्क या शब्द के सादृश्य पर स्वयं के साथ अविभाज्य रूप से एक होने के नाते।

यह सिद्धांत लोगोस और डायथेटोस के समर्थक के समय से ही जाना-पहचाना है, और हिप्पोलिटस वास्तव में तकनीकी शब्द का उपयोग करता है। उसके लिए, जैसा कि टैशन और इरेनियस के लिए, ईश्वर का वचन और उसकी बुद्धि प्रतिष्ठित है, वास्तव में, पुत्र और आत्मा को आसन्न माना जाता है, लेकिन टर्टुलियन एक ऐसी परंपरा का पालन करता है जो बुद्धि को शब्द के बराबर मानता है। टर्टुलियन स्पष्ट है, यह इंगित करते हुए कि सभी चीजों से पहले, ईश्वर अकेला था, उसका अपना ब्रह्मांड, स्थान, सब कुछ था।

हालाँकि, वह अकेला था, इस अर्थ में कि उसके बाहर कुछ भी नहीं था, लेकिन फिर भी, वह वास्तव में अकेला नहीं था, क्योंकि उसके पास वह तर्क था जो उसके भीतर था, यानी उसका अपना तर्क। इसके अलावा, वह अपने किसी भी पूर्ववर्ती की तुलना में इस आसन्न तर्क या शब्द की अन्यता या वैयक्तिकता को कहीं अधिक स्पष्ट रूप से सामने लाता है। वह दिव्य शब्द जिसके साथ ईश्वर अनंत काल से विभक्त हो रहा था और जो, उद्धारण, स्वयं के अतिरिक्त दूसरा, निकट उद्धारण बनाता है।

दूसरी बात, हालाँकि, ईश्वर के आंतरिक अस्तित्व की त्रिगुणात्मकता, क्षमा करें, सृजन और उद्धार में प्रकट होती है। हिप्पोलिटस के अनुसार, जब ईश्वर ने चाहा, तो उसने अपने शब्द को जन्म दिया, उसका उपयोग ब्रह्मांड बनाने और अपनी बुद्धि का उपयोग उसे सजाने या आदेश देने के लिए किया। बाद में, दुनिया के उद्धार को ध्यान में रखते हुए, उसने अब तक अदृश्य शब्द को अवतार में अदृश्य बना दिया।

इसके बाद, पिता के साथ, यानी स्वयं ईश्वरत्व के साथ, एक और ईश्वरत्व भी था; एक और था, दूसरा व्यक्ति, जबकि आत्मा ने त्रय को पूरा किया। लेकिन अगर अर्थव्यवस्था में तीन प्रकट होते हैं, तो वास्तव में, केवल एक ईश्वर है क्योंकि यह पिता है जो आज्ञा देता है, पुत्र जो आज्ञा का पालन करता है, और आत्मा जो हमें समझाती है। हिप्पोलिटस आवश्यक एकता पर सबसे अधिक जोर देते हैं, यह कहते हुए कि केवल एक ही शक्ति है और जब मैं दूसरे की बात करता हूँ, तो मेरा मतलब दो ईश्वरों से नहीं है, बल्कि ऐसा लगता है कि प्रकाश से प्रकाश, उसके स्रोत से पानी, सूर्य से एक किरण।

ये शब्द कुछ धर्म-पंथों में भी शामिल हो गए। क्योंकि एक ही शक्ति है, और वह सब से निकलती है। सब कुछ पिता है, और सब से निकलने वाली शक्ति शब्द है।

वह पिता का मन है, इसलिए सभी चीजें उसके द्वारा हैं, लेकिन केवल वही पिता से है।" फिर से, इन शब्दों का बाद के धर्मशास्त्र द्वारा मूल्यांकन नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि यदि आप ऐसा करते हैं, तो वे अधीनतावादी लगते हैं, जैसे कि व्यक्ति व्यक्ति नहीं थे, यह एक बाद का शब्द है, जैसे कि तीनों शाश्वत नहीं थे, लेकिन उस आधार पर उनका मूल्यांकन करना उचित नहीं है। यह कालभ्रम करना है। हिप्पोलिटस अवतार तक एक भविष्यसूचक अर्थ, एक भविष्यवाणी अर्थ के अलावा किसी अन्य अर्थ में पुत्र के रूप में शब्द को नामित करने के लिए अनिच्छुक था।

टर्टुलियन ने सृष्टि के कार्य के लिए अपने अनुमान से अपनी आदर्श पीढ़ी की तिथि निर्धारित करने में क्षमाप्रार्थी का अनुसरण किया। उस क्षण से पहले, ईश्वर के बारे में सख्ती से यह नहीं कहा जा सकता था कि उसका कोई पुत्र था, जबकि उसके बाद, पिता शब्द, जो पहले के धर्मशास्त्रियों के लिए आम तौर पर पिता ईश्वर को वास्तविकता के लेखक के रूप में दर्शाता था, ने पुत्र के पिता का विशेष अर्थ प्राप्त करना शुरू कर दिया। इस प्रकार उत्पन्न होने पर, पुत्र शब्द एक व्यक्ति, व्यक्तित्व और पिता के अतिरिक्त दूसरा है।

तीसरे स्थान पर, हालांकि, आत्मा है, जो पुत्र का प्रतिनिधि या प्रतिनिधि है। वह पुत्र के माध्यम से पिता से निकलता है, पिता और पुत्र से तीसरा है, जैसे कि अंकुर से निकला फल जड़ से तीसरा है, और जैसे नदी से निकाला गया नाला झरने से तीसरा है, और जैसे कि किरण में प्रकाश बिंदु सूर्य से तीसरा है। वह भी एक व्यक्ति है, इसलिए देवत्व एक त्रिदेव है, त्रिनेत्र।

टर्टुलियन इस शब्द का प्रयोग करने वाले पहले व्यक्ति हैं। तीनों वास्तव में संख्यात्मक रूप से अलग-अलग हैं, जिन्हें गिना जा सकता है। इस प्रकार टर्टुलियन कह सकते हैं, "हम केवल एक ईश्वर में विश्वास करते हैं, फिर भी इस व्यवस्था के अधीन हैं, जो कि अर्थव्यवस्था के लिए हमारा शब्द है, कि एकमात्र ईश्वर का एक पुत्र भी है, उसका वचन, जो स्वयं से निकला है, जिसे पुत्र ने अपने वादे के अनुसार, पिता से पवित्र आत्मा, पैराक्लीट भेजा।"

बाद में, उसी संदर्भ में, वह ईश्वरीय एकता को "अर्थव्यवस्था के रहस्य" के साथ संतुलित कर सकता है, जो तीनों को त्रिदेवों में बांटता है, पिता, पुत्र और आत्मा को तीन के रूप में प्रस्तुत करता है। टर्टुलियन ने यह दिखाने के लिए खुद को झोंक दिया कि अर्थव्यवस्था में प्रकट त्रित्व किसी भी तरह से ईश्वर की आवश्यक एकता के साथ असंगत नहीं था। हिप्पोलिटस की तरह,

उन्होंने तर्क दिया कि यद्यपि तीन व्यक्ति एक अविभाज्य शक्ति के कई रूप थे, उन्होंने कहा कि शाही सरकार के सादृश्य पर, एक ही संप्रभुता में समन्वय एजेंसियों द्वारा प्रयोग किया जा सकता है।

क्षमाप्रार्थी की तरह, उन्होंने बार-बार इस सुझाव को खारिज किया कि तीनों के बीच के अंतर में कोई विभाजन या अलगाव शामिल है। यह एक डिस्टिंक्शियो या डिस्पोज़िटियो था, एक वितरण, न कि एक सेपरेटियो, और उन्होंने जड़ और उसकी शाखा, स्रोत और नदी, और सूर्य और उसके प्रकाश के बीच एकता को उदाहरणों के रूप में उद्धृत किया। इसे व्यक्त करने का उनका विशिष्ट तरीका यह कहना था कि पिता, पुत्र और आत्मा तत्व में एक हैं।

इस प्रकार, पिता और पुत्र एक समान पदार्थ हैं, जिसे विभाजित नहीं किया गया है, बल्कि विस्तारित किया गया है। उद्धारकर्ता का दावा, मैं और पिता एक हैं, यह दर्शाता है कि तीनों एक वास्तविकता हैं, उद्धारण, एक व्यक्ति नहीं, जैसा कि यह पदार्थ की पहचान की ओर इशारा करता है न कि केवल संख्यात्मक एकता की ओर। पुत्र पिता के साथ एक पदार्थ है, और पुत्र और आत्मा पिता के पदार्थ के साथ समान हैं।

अशिष्ट भौतिकवादी भाषा का प्रयोग करते हुए, उन्होंने दिव्य आत्मा को रूपकात्मक रूप से पदार्थ की एक अत्यंत दुर्लभ प्रजाति के रूप में माना। कांटेरियन कह सकते हैं, उद्धारण, कि पिता संपूर्ण पदार्थ है, जबकि पुत्र संपूर्ण पदार्थ का एक व्युत्पन्न और भाग है, उद्धारण बंद करें, जहां संदर्भ यह स्पष्ट करता है कि भाग को शाब्दिक रूप से किसी भी विभाजन या विच्छेदन के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। इस प्रकार, जब वह मामले को सारांशित करता है, तो वह इस विचार को खारिज कर देता है कि व्यक्ति स्थिति, पदार्थ या शक्ति में तीन हो सकते हैं।

इनके संबंध में, ईश्वरत्व अविभाज्य रूप से एक है, और त्रित्व केवल उस स्तर, पहलू या अभिव्यक्ति पर लागू होता है जिसमें व्यक्ति प्रस्तुत किए जाते हैं। हिप्पोलिटस और टर्टुलियन इरेनियस के साथ अर्थव्यवस्था में प्रकट तीनों को बहुलता की अभिव्यक्ति के रूप में मानते थे, जिसे उन्होंने, हालांकि अस्पष्ट रूप से, ईश्वरत्व के आसन्न जीवन में समझा था। जहाँ इरेनियस की उन्नति हुई, वह उनके प्रयासों में थी, एक, ए, दिव्य शक्ति या पदार्थ की एकता को स्पष्ट करने के लिए, जिसके तीन अभिव्यक्ति या रूप थे, और बी, उनके द्वारा व्यक्तियों के रूप में उनके वर्णन में, प्रोसोपा, ग्रीक, पर्सोना, लैटिन।

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि यह बाद वाला शब्द अभी भी उनके लिए आरक्षित था क्योंकि यह रहस्योद्घाटन के क्रम में प्रकट हुआ था। बाद में ही इसे आत्मा में शब्द के लिए लागू किया जाने लगा, जो ईश्वर के शाश्वत अस्तित्व में आसन्न है। उनकी शब्दावली के सटीक अर्थ के बारे में बहुत चर्चा हुई है, कुछ लोगों का तर्क है कि टर्टुलियन के लिए, किसी भी दर पर, उनके कानूनी पालन-पोषण के साथ, पर्याप्त का मतलब संपत्ति का एक टुकड़ा था जिसे कई लोग संयुक्त रूप से स्वामित्व कर सकते थे।

वास्तव में, हालांकि, उनके दिमाग में रूपक का भाव सबसे प्रमुख था, और शब्द का अर्थ ईश्वरीय सार था, जिसका अर्थ है ईश्वर अपनी ठोस वास्तविकता पर जोर देता है। जैसा कि उन्होंने टिप्पणी

की, "ईश्वर पदार्थ का नाम है, अर्थात्, दिव्यता, और शब्द, मात्र काल्पनिक गैर-अस्तित्व होने से बहुत दूर, मूल है, आत्मा और बुद्धि और तर्क से बना एक पदार्थ है।" इसलिए, जब वह पुत्र को पिता के साथ एक पदार्थ के रूप में बोलते हैं, तो उनका मतलब है कि वे एक ही दिव्य प्रकृति या सार साझा करते हैं।

और, वास्तव में, चूँकि ईश्वरत्व अविभाज्य है, इसलिए वे एक समान प्राणी हैं। दूसरी ओर, ग्रीक और लैटिन में व्यक्ति और व्यक्ति शब्द तीनों की अन्यता या स्वतंत्र अस्तित्व को व्यक्त करने के लिए सराहनीय रूप से उपयुक्त थे। मूल रूप से चेहरा, और इसलिए अभिव्यक्ति, और फिर भूमिका का अर्थ रखने के बाद, पूर्व ग्रीक प्रोसोपा, या चेहरा या व्यक्ति, व्यक्ति को इंगित करने लगा, जिसमें आमतौर पर बाहरी पहलू या वस्तुनिष्ठ प्रस्तुति पर जोर दिया जाता था।

लैटिन पर्सोना का प्राथमिक अर्थ एक मुखौटा था, जिससे इसे पहनने वाले अभिनेता और उसके द्वारा निभाए गए चरित्र के लिए संक्रमण आसान था। कानूनी उपयोग में, यह किसी संपत्ति के शीर्षक के धारक के लिए खड़ा हो सकता है, लेकिन जैसा कि टर्टुलियन द्वारा नियोजित किया गया था, यह एक व्यक्ति की ठोस प्रस्तुति को दर्शाता है। किसी भी मामले में, यह ध्यान दिया जाना चाहिए, आजकल व्यक्ति के साथ जुड़ी आत्म-चेतना का विचार, और व्यक्तिगत रूप से सभी प्रमुख थे।

गतिशील राजतंत्रवाद, दूसरी सदी के अंतिम दशकों में, दो तरह की शिक्षाओं का उदय हुआ, जो मौलिक रूप से अलग-अलग होते हुए भी आधुनिक इतिहासकारों द्वारा राजतंत्रवाद के सामान्य नाम के तहत एक साथ लाए गए हैं। गतिशील राजतंत्रवाद, जिसे अधिक सटीक रूप से दत्तक ग्रहणवाद कहा जाता है, वह सिद्धांत था कि मसीह एक मात्र मनुष्य था, जिस पर ईश्वर की आत्मा उतरी थी। यह अनिवार्य रूप से एक ईसाई धर्म संबंधी पाखंड था, लेकिन जिन परिस्थितियों में यह उत्पन्न हुआ, वे यहाँ त्रित्ववाद के तहत इसके उपचार को उचित ठहराते हैं।

मोडलिज्म, अर्थात् गतिशील राजतंत्रवाद और मोडलिस्टिक राजतंत्रवाद। उनमें क्या समानता है? राजतंत्रवाद ईश्वर की राजसत्ता और एकता है। ये गलतियाँ, और वे बड़ी गलतियाँ थीं, यह दर्शाती हैं कि चर्च ईश्वरत्व की एकता से विचलित नहीं हुआ।

वास्तव में, यह इतना बड़ा था कि उन्होंने पुत्र और आत्मा से संबंधित डेटा को गलत तरीके से बताने की कोशिश की। लेकिन इसे परमेश्वर की एकता से नहीं हटाया जा सकता था। यह अच्छी बात है।

ये अन्य परिणाम भयानक थे। मसीह एक साधारण मनुष्य है।

और परमेश्वर ने उसे आत्मा देकर गोद लिया। अच्छा, क्या यही उसके बपतिस्मा के समय नहीं हुआ? नहीं। अनन्त पुत्र जो मनुष्य बन गया, उसे बपतिस्मा के समय पृथ्वी पर अपनी सेवकाई करने के लिए आत्मा दी गई।

वह नहीं था, और हाँ, उसे एक अर्थ में अपनाया गया था, लेकिन इस अर्थ में नहीं, कि वह मात्र एक मनुष्य था और उसे ईश्वर से कमतर किसी प्रकार के दिव्य प्राणी के रूप में अपनाया गया था। मोडलिज्म, जिसे अकेले समकालीनों द्वारा राजतंत्रवाद द्वारा नामित किया गया था, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के बीच के अंतर को धुंधला करने की प्रवृत्ति रखता था। राजतंत्रवाद के रूपों के रूप में दोनों का वर्गीकरण इस धारणा से उपजा है कि अलग-अलग शुरुआती बिंदुओं और उद्देश्यों के बावजूद, वे दिव्य एकता, या राजतंत्र के लिए एक चिंता से एकजुट थे।

मोडलिस्टिक राजतंत्रवाद। यदि गतिशील राजतंत्रवाद मुख्य रूप से तर्कवादी अपील के साथ एक अपेक्षाकृत अलग घटना थी, तो वही राजतंत्रवाद के बारे में नहीं कहा जा सकता है, जिसे अन्यथा मोडलिज्म कहा जाता है, जो विचार की एक काफी व्यापक लोकप्रिय प्रवृत्ति थी, जिसे किसी भी दर पर आधिकारिक हलकों में सहानुभूति का एक उपाय माना जा सकता था। और इसके पीछे प्रेरक शक्ति ईश्वर की एकता और मसीह की पूर्ण ईश्वरत्व के बारे में भावुक रूप से रखी गई दोहरी धारणा थी।

जिस बात ने इसे उजागर करने पर मजबूर किया, वह यह संदेह था कि इन सत्यों में से पहला, ईश्वर की एकता, नए लोगोस सिद्धांत और धर्मशास्त्रियों द्वारा ईश्वरत्व को अर्थव्यवस्था में त्रि-व्यक्तित्व के रूप में प्रकट करने के प्रयासों से खतरे में पड़ रहा था। तीन ईश्वर हैं? क्या इससे ईश्वर की एकता खतरे में नहीं पड़ती? यह एक ऐसा सत्य है जिस पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता। यह था, लेकिन इसका परिणाम अच्छा नहीं था।

ऐसा कोई भी सुझाव कि शब्द या पुत्र पिता से भिन्न या अलग व्यक्ति है, मोडलिस्टों को अनिवार्य रूप से दो देवताओं की निन्दा की ओर ले जाता प्रतीत होता है। इसलिए, परिणामस्वरूप, मोडलिस्ट राजतंत्रवादियों ने सिखाया कि ईश्वर एक है, और वास्तव में उसने खुद को पिता के रूप में प्रकट किया, और मसीह में उसने खुद को पुत्र के रूप में प्रकट किया, और पितृकुस्त और उसके बाद उसने खुद को आत्मा के रूप में प्रकट किया। लेकिन ये सब क्रमिक रूप से किया गया, एक साथ नहीं।

अब परमेश्वर, एकमात्र परमेश्वर, पिता था। अब, वही एकमात्र परमेश्वर पुत्र था, अब पिता नहीं रहा। और अब वही एकमात्र परमेश्वर आत्मा के रूप में प्रकट हुआ, अब पिता या पुत्र नहीं रहा।

मोड शब्द का प्रयोग निर्णायक नहीं है, क्योंकि हम एक दिव्य सार के भीतर तीन व्यक्तियों, अस्तित्व के तीन तरीकों और अस्तित्व के तीन तरीकों के बारे में बात कर सकते हैं, और यह सब बोलने के रूढ़िवादी तरीके हैं। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि क्या तीनों एक साथ ईश्वर हैं, या तीनों क्रमिक रूप से ईश्वर हैं? वननेस पेंटेकोस्टलिज्म मोडलिज्म का एक आधुनिक रूप है, जो यीशु पिता, यीशु पुत्र और यीशु पवित्र आत्मा को मानता है। एरियन संघर्ष में, जिन्होंने मसीह के ईश्वरत्व को नकार दिया, लोगों के मन में यह सवाल उठ रहा था कि पुत्र का पूर्ण ईश्वरत्व क्या है।

हालाँकि यह त्रित्व के सिद्धांत में एक आवश्यक घटक था, लेकिन बाद में इसे पहले पृष्ठभूमि में रखा गया था। निकेने पंथ, वास्तव में, केवल पवित्र आत्मा में विश्वास की पुष्टि करता था, और ईश्वरत्व में आत्मा की स्थिति के बारे में कोई सार्वजनिक विवाद होने से पहले कई साल बीत गए

थे। फिर भी, गहरे मुद्दों की चर्चा को अनिश्चित काल के लिए स्थगित नहीं किया जा सकता था, और यहाँ, हम त्रित्ववादी रूढ़िवाद के निर्माण का पता लगाएंगे।

इसके लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार धर्मशास्त्री पूर्व में थे, कैप्पाडोसियन फादर। मुझे वहाँ एक और पंक्ति की आवश्यकता है, धन्यवाद, मेरे दोस्त। बेसिल द ग्रेट, 325 से 379, ग्रेगरी ऑफ निस्सा, उनके भाई, 335 से 395, और ग्रेगरी नाज़ियानज़स, 325 से 390।

निस्सा के ग्रेगरी बेसिल के छोटे भाई थे। पश्चिम में, ऑगस्टीन, बेशक। हम देखना चाहते हैं कि उन्होंने यह कैसे किया, लेकिन कुछ विचारधाराएँ हैं जो हमें उस ओर ले जाती हैं।

ओसियन चर्च के बहुत से लोगों का होमो -ओसियन दृष्टिकोण को स्वीकार करना। हे भगवान, क्या मैंने आपको पहले बताया था, हम पेशेवर धर्मशास्त्री इन चीजों को पसंद करते हैं क्योंकि ये हमें रोजगार देते हैं, ये भेद। दूसरा था, और मैं समझाऊंगा कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ, पवित्र आत्मा की स्थिति में रुचि का उदय, पिता और पुत्र के साथ पूरी तरह से व्यक्तिगत और एकरूप के रूप में उनकी मान्यता में परिणत हुआ।

ईसाई धर्मशास्त्र पर हमला किया गया है। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि लोग एक ग्रीक अक्षर के लिए युद्ध करने जा रहे हैं? खैर, क्या बेटा पिता और पिता के बराबर है, या वह उसके जैसा है, यह एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, और हाँ, इसे एक अक्षर या एक हजार शब्दों द्वारा व्यक्त किया जा सकता है, जो भी हो, यह एक महत्वपूर्ण मामला है। इन घटनाक्रमों में से पहले में मुख्य रूप से चिंतित व्यक्ति एथनासियस और हिलेरी ऑफ पोइटियर्स थे।

दोनों ने ही महसूस किया कि बुनियादी मुद्दों के संबंध में होमो-एट- ओसियन और निकेन पार्टी, होमो -ओसियन के बीच का अंतर बहुत कम था और उनके बीच मेल-मिलाप स्थापित करके उत्तरार्द्ध की अंतिम सफलता सुनिश्चित की जा सकती थी। इसलिए, अपने डी सिनाटिस 359 में, अथानासियस ने एक समझौतापूर्ण इशारा किया, होमो-एट- ओसियन को भाइयों के रूप में सलाम किया, जो अनिवार्य रूप से खुद के साथ एक थे, क्योंकि उन्होंने पहचान लिया था कि बेटा पिता के ओसिया से बाहर था, न कि किसी अन्य हाइपोस्टैसिस से। उनके प्रामाणिक संतान और उनके साथ सह-शाश्वत, वे होमो- ओसियन को स्वीकार करने के लिए काफी करीब थे, जो अकेले ही उस सत्य को सटीकता से व्यक्त करता था जिसे उन्होंने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया था।

हिलेरी अपने सूत्रों में और भी आगे बढ़ गए। 362 में अलेक्जेंड्रिया की परिषद में बहुत महत्व का एक और व्यावहारिक कदम उठाया गया, जिसकी अध्यक्षता एथनासियस ने की थी। प्रत्येक सतर्क पाठक ने इस बात पर गौर किया होगा और आश्चर्यचकित हुआ होगा कि इस समय किस हद तक धार्मिक विभाजन पैदा किए गए थे और विभिन्न और परस्पर भ्रमित करने वाले धार्मिक शब्दों के उपयोग से उन्हें जीवित रखा गया था।

अलेक्जेंड्रिया की परिषद में, औपचारिक रूप से यह माना गया कि जो मायने रखता है वह इस्तेमाल की गई भाषा नहीं है, बल्कि उसमें निहित अर्थ है। वाह! भाषाई प्रगति, मेरे दोस्तों। इस

प्रकार, सूत्र, तीन हाइपोस्टेसिस, जो अब तक निकेन्स के लिए संदिग्ध था, क्योंकि यह उनके कानों में तीन ओसिया, तीन दिव्य प्राणियों की तरह दर्दनाक रूप से सुनाई देता था, को वैध घोषित किया गया, बशर्ते कि इसमें आर्यन का अर्थ न हो, जो कि एक दूसरे से पदार्थ में भिन्न, बिल्कुल अलग विदेशी हाइपोस्टेसिस हो।

दूसरे शब्दों में, तीन सिद्धांत या अलग-अलग देवता। जो हो रहा है वह भाषा की परिभाषा और सुरक्षा के आधार पर समझौता है, लेकिन केवल व्यक्त किया गया है, यानी, ओसिया, तीन ओसिया, केवल तीन व्यक्तियों के एकसमान त्रय में अलग-अलग अस्तित्व को व्यक्त करता है। विपरीत सूत्र, एक हाइपोस्टेसिस, जो हर स्कूल के एंटी-निकेनेस को परेशान करता है, समान रूप से स्वीकृत था, इसके अनुयायियों को समझाया गया कि उनका कोई नागरिक इरादा नहीं था, लेकिन हाइपोस्टेसिस को ओसिया के साथ बराबर करते हुए, वे केवल पिता और पुत्र के बीच प्रकृति की एकता को सामने लाने की कोशिश कर रहे थे।

इस राजनेता जैसे निर्णय से, जिसने संयोगवश पश्चिम में बहुतों को चौंका दिया, जिन्होंने तीन हाइपोस्टेसिस में त्रिदेववाद की स्वीकारोक्ति देखी, दोनों पक्षों के बीच एकता लगभग तय हो गई, और हम इसमें उस सूत्र की झलक देख सकते हैं जो रूढ़िवाद का प्रतीक बन गया, एक ओसिया, तीन हाइपोस्टेसिस, एक सार, तीन व्यक्ति। यह सिद्धांत आगे बढ़ाया गया है कि इन प्रस्तावों को बनाने में, अथानासियस और हिलेरी होमोसियन के उपयोग को होम एटोसियन अर्थ में मंजूरी दे रहे थे, और यह एक त्रुटि है जिसका हम अनुसरण नहीं करेंगे, अगर पिता और पुत्र के रूप में माना जाता है, तो व्यक्ति दो हैं, और उन्हें उचित रूप से समान कहा जा सकता है, जो पदार्थ उन दोनों के पास है, और वे एक में हैं, और एक और अविभाज्य हैं। अथानासियस और हिलेरी का यह राजनेता जैसा रवैया प्रभावहीन नहीं था।

ऐसे समय में जब होमोओसियन का बड़ा समूह अप्रतिबंधित एरियनवाद के खतरे से लगातार आशंकित हो रहा था, इसने उनके संदेह को शांत कर दिया कि रूढ़िवादी पार्टी पूरी तरह से सिबेलियन थी, और होमोओसियन धर्मशास्त्र को उनके लिए अधिक स्वादिष्ट बना दिया। आत्मा का होमोओसियन, अथानासियस, विकास की दूसरी पंक्ति, जो कि आत्मा के पूर्ण देवता की मान्यता है, एक लंबी चर्चा की मांग करती है, जिसमें अथानासियस के अग्रणी योगदान का विवरण शामिल है। ओरिजन के दिनों से, आत्मा के बारे में धार्मिक चिंतन भक्ति अभ्यास से काफी पीछे रह गया था।

ओरिजन ने जॉन 1-3 की व्याख्या करते हुए यह तर्क देकर परेशानी खड़ी कर दी कि आत्मा उन चीजों में से एक है जो सूर्य के माध्यम से अस्तित्व में आई थी। ओह! कैप्पाडोसियन को इनमें से कुछ मुद्दों को संबोधित करना था।

अगर वे एरियन के इस व्यंग्य का उत्तर देते कि आत्मा के होमोसेक्सुअल होने का अर्थ पिता द्वारा दो पुत्रों को जन्म देना है, तो कैप्पाडोसियन ने सूर्य के ओरिजन और आत्मा के बीच अंतर किया। निस्सा के ग्रेगरी ने इस निश्चित कथन को प्रमाणित करने के लिए कुछ प्रदान किया। अन्य दो कैप्पाडोसियन उतने स्पष्ट या जोरदार नहीं थे।

ग्रेगरी ऑफ निस्सा ने सिखाया कि आत्मा ईश्वर से आती है और मसीह से आती है। वह पिता से निकलती है और पुत्र से ग्रहण करती है। उसे वचन से अलग नहीं किया जा सकता।

इससे आत्मा के दोहरे क्रम के विचार तक पहुँचने में एक छोटा सा कदम है। निस्सा के ग्रेगरी के अनुसार, तीन व्यक्तियों को उनके मूल से अलग किया जाना चाहिए, पिता कारण है और अन्य दो कारण हैं। कारण बनने वाले दो व्यक्तियों को आगे नामित किया जा सकता है क्योंकि उनमें से एक को सीधे पिता द्वारा उत्पादित किया जाता है जबकि दूसरा पिता से मध्यस्थ के माध्यम से आगे बढ़ता है।

इस प्रकाश में देखा जाए तो, केवल पुत्र ही एकमात्र जन्मा होने का दावा कर सकता है, और पिता के साथ आत्मा का संबंध किसी भी तरह से इस तथ्य से पक्षपातपूर्ण नहीं है कि वह पुत्र के माध्यम से उससे अपना अस्तित्व प्राप्त करता है। यह सब शाश्वत है, वे सृजित प्राणी नहीं हैं। अन्यत्र ग्रेगरी पुत्र को आत्मा से संबंधित बताते हैं, जो कारण से प्रभाव के रूप में है और तीन व्यक्तियों के संबंध को स्पष्ट करने के लिए एक मशाल के सादृश्य का उपयोग करता है जो पहले एक अन्य मशाल को छूता है और फिर उसके माध्यम से तीसरे को छूता है।

यह स्पष्ट रूप से ग्रेगरी का सिद्धांत है कि पुत्र एक एजेंट के रूप में कार्य करता है, इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह पिता के अधीन है जो आत्मा के उत्पादन में त्रिदेव का स्रोत है। उसके बाद पूर्वी चर्च की नियमित शिक्षा यह है कि पवित्र आत्मा का जुलूस पिता से पुत्र के माध्यम से होता है। जैसा कि कैप्पाडोसियन ने कहा है, पिता से पुत्र के माध्यम से दो गुना जुलूस के विचार में अधीनतावाद का कोई निशान नहीं है क्योंकि इसकी स्थापना आत्मा के होमो सागर की पूरी तरह से मान्यता है।

आत्मा का सार पिता और पुत्र के समान ही है। दूसरे शब्दों में, आत्मा भी ईश्वर है जबकि ईश्वर केवल एक ही है। कैप्पाडोसियन और ट्रिनिटी, हम जिस विकास का अध्ययन कर रहे हैं उसका चरमोत्कर्ष 381 में कॉन्स्टेंटिनोपल की परिषद में निकेने विश्वास की पुष्टि थी।

इवाग्रिअस जैसे शिक्षकों द्वारा उदाहरण के रूप में प्रचलित धर्मशास्त्र पोंटिकस को पदार्थ के मामले में एथनासियस के समान ही उचित रूप से वर्णित किया जा सकता है। यह सच है कि उनके दृष्टिकोण का कोण होमो महासागर परंपरा से उभरने वाले उनके दृष्टिकोण से कुछ अलग था, यह स्वाभाविक था कि उन्होंने एक दिव्य पदार्थ के बजाय तीन हाइपोस्टेसिस को अपना प्रारंभिक बिंदु बनाया।

अथानासियस की तरह वे पुत्र और आत्मा दोनों के होमो सागर के चैंपियन थे। उनके सिद्धांत का सार यह है कि एक ईश्वरत्व एक साथ मौजूद है, यही बात इसे मोडलिस्टिक राजतंत्रवाद या मोडलिज्म से अलग करती है, जो क्रमिक रूप से ईश्वर को पिता पुत्र और आत्मा के रूप में मौजूद मानता है। उनके सिद्धांत का सार यह है कि एक ईश्वरत्व एक साथ तीन प्रकार के अस्तित्व या हाइपोस्टेसिस में मौजूद है।

इसलिए बोसवेल टिप्पणी करते हैं, "पिता जो कुछ भी है वह पुत्र में दिखाई देता है और पुत्र जो कुछ भी देख रहा है वह यह है कि पुत्र पिता का है, पुत्र अपनी संपूर्णता में पिता में रहता है और बदले में पिता को अपने में संपूर्णता में रखता है। इस प्रकार पुत्र का हाइपोस्टैसिस, एक तरह से वह रूप और प्रस्तुति है जिसके द्वारा पिता को जाना जाता है और पिता के हाइपोस्टैसिस को पुत्र के रूप में पहचाना जाता है। यहाँ हमारे पास सह-अस्तित्व का सिद्धांत है या जैसा कि बाद में इसे दिव्य व्यक्तियों का पेरिचोरेसिस कहा गया।

कहा जा सकता है कि ईश्वरत्व विभाजित व्यक्तियों में अविभाजित रूप से विद्यमान है और तीनों हाइपोस्टैसिस में प्रकृति की एकता है। तीनों की एक प्रकृति है, अर्थात् ईश्वर, जो कि आधार है और एकता पिता है, जिसमें से और जिसके प्रति बाद के व्यक्तियों की गणना की जाती है। जबकि सभी अधीनतावाद को बाहर रखा गया है, पिता कप्पाडोसियन की दृष्टि में ईश्वरत्व का स्रोत स्रोत या सिद्धांत बना हुआ है।

आज भी पूर्वी ईसाई धर्म यही है। विचार यह है कि वह अपने अस्तित्व को दो अन्य व्यक्तियों को प्रदान करता है, और इसलिए कहा जा सकता है कि वह उनका कारण है, फिर भी यह अस्तित्व का एक शाश्वत प्रदान है। यह समझाने के लिए कि एक पदार्थ एक साथ तीन व्यक्तियों में कैसे मौजूद हो सकता है, वे एक सार्वभौमिक और उसके विवरणों के सादृश्य की अपील करते हैं।

इस दृष्टिकोण से प्रत्येक दिव्य हाइपोस्टैसिस ईश्वरत्व का यूसिया या सार है जो इसकी उपयुक्त विशिष्ट विशेषता द्वारा निर्धारित होता है। मूल के लिए वे विशिष्ट विशेषताएँ क्रमशः पितृत्व पिता, पुत्रत्व पुत्र, और पवित्र करने वाली शक्ति या पवित्रता आत्मा हैं। अन्य कैप्पाडोसियन उन्हें अधिक सटीक रूप से जनरेटिवनेस के रूप में परिभाषित करते हैं अजन्मापन पिता उत्पत्ति जन्मता पुत्र और मिशन या जुलूस आत्मा।

इस प्रकार व्यक्तियों का भेद उनके मूल में ईश्वरत्व और पारस्परिक संबंध के भीतर शाश्वत उत्पत्ति पर आधारित है। इस प्रकार कैप्पाडोसियन ने उन तरीकों का विश्लेषण किया था जिसमें एक अविभाज्य दिव्य पदार्थ वितरित होता है और खुद को प्रस्तुत करता है और इसलिए उन्हें अस्तित्व में आने के तरीके कहा जाने लगा। आधुनिक भाषा में, समग्र रूप से संपूर्ण अविभाज्य पदार्थ प्रत्येक व्यक्ति के संपूर्ण अविभाज्य अस्तित्व के समान है।

व्यक्तित्व केवल वह तरीका है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति में समान पदार्थ को वस्तुनिष्ठ रूप से प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार कैप्पाडोसियन ने अथानासियस की तुलना में हाइपोस्टैसिस हाइपोस्टैसिस की अवधारणा का अधिक गहन विश्लेषण किया था। यह आरोप कि वे त्रिदेववादी थे, बेतुके हैं और उन्हें अस्वीकार किया जाना चाहिए।

संत ऑगस्टीन का योगदान 354 से 430 तक रहा, जो आरंभिक चर्च के सबसे महान पिता थे और शायद चर्च के इतिहास में सबसे प्रभावशाली ईसाई थे, कम से कम सुधार के दौरान लूथर और केल्विन दोनों ने उन्हें अपना शिक्षक माना। हालाँकि, यह ऑगस्टीन ही थे, जिन्होंने कैप्पाडोसियन की पश्चिमी परंपरा को पूर्वी परंपरा को आकार दिया। हालाँकि, यह ऑगस्टीन ही थे, जिन्होंने पश्चिमी परंपरा को उसकी परिपक्व और अंतिम अभिव्यक्ति दी।

एक ईसाई के रूप में अपने पूरे जीवन में, वह त्रिदेव की समस्या पर चिंतन करते रहे, जिज्ञासुओं को चर्च के सिद्धांत को समझाते रहे और हमले के खिलाफ इसका बचाव करते रहे। शायद उनका सबसे बड़ा काम ट्रिनिटी पर डेट्रिनिटे के रूप में जाना जाने वाला लंबा और विस्तृत विचार-विमर्श है, जिसे उन्होंने 399 और 419 के बीच अलग-अलग तारीखों पर एक साथ रखा था। वह बिना किसी सवाल के इस सच्चाई को स्वीकार करते हैं कि एक ईश्वर है जो त्रिदेव है और पिता, पुत्र और आत्मा एक साथ अलग और संख्यात्मक रूप से एक हैं, और उनके लेखन में इसके विस्तृत बयान भरे पड़े हैं। वह कहीं भी इसे साबित करने का प्रयास नहीं करते हैं; हालाँकि, यह रहस्योद्घाटन का एक डेटा है, जो उनके विचार में, शास्त्र लगभग हर पृष्ठ पर घोषित करता है और जिसे कैथोलिक विश्वास, सार्वभौमिक विश्वास, विश्वासियों को सौंपता है।

यह उनके सिद्धांत का एक सर्वोच्च उदाहरण है कि विश्वास को समझ से पहले होना चाहिए। एक सिद्धांत जिसे एन्सेलम ने और अधिक प्रसिद्ध किया लेकिन हमेशा की तरह इसका स्रोत ऑगस्टीन है। जबकि ऑगस्टीन की त्रिमूर्ति रूढ़िवादिता की व्याख्या उनके ईश्वर की पूर्ण अवधारणा में शास्त्रीय है, जो कि सरल और अविभाज्य है और श्रेणियों से परे है, इसकी हमेशा मौजूद पृष्ठभूमि बनाती है।

इसलिए, उस परंपरा के विपरीत जिसने पिता को अपना प्रारंभिक बिंदु बनाया, पूर्वी परंपरा जिसे उन्होंने शुरू किया, वह स्वयं दिव्य प्रकृति से शुरू होता है। दिव्य प्रकृति की एकता पर इस जोर से कई परिणाम निकलते हैं। हम कल इनका और अधिक अन्वेषण करेंगे। मैं अपने अगले व्याख्यान में केवल रूपरेखा दे रहा हूँ, मेरा मतलब है कि मैं अभी कुछ रूपरेखाएँ दूँगा।

इससे व्यक्तियों के बीच यह भेद उत्पन्न होता है जिसे ऑगस्टीन ईश्वरत्व के भीतर उनके आपसी संबंधों में निहित मानते हैं। तीसरा, ऑगस्टीन हमेशा यह समझाने में उलझन में रहते थे कि आत्मा का क्रम क्या है या यह पुत्र की पीढ़ी से कहाँ भिन्न है। अंत में, ऑगस्टीन का त्रित्ववादी धर्मशास्त्र में सबसे मौलिक योगदान मानव आत्मा की संरचना से समानताओं का उपयोग है।

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि इनका कार्य ईश्वर को त्रिदेव के रूप में प्रदर्शित करना नहीं है। उनके विचार से, रहस्योद्घाटन हमें पूर्ण एकता के रहस्य और फिर भी तीनों के बीच वास्तविक अंतर की हमारी समझ को गहरा करने की शिक्षा देता है। ईश्वर की इच्छा से, हम अपने अगले व्याख्यान में ऑगस्टीन की शिक्षा का पता लगाएंगे, जो पश्चिम के त्रिदेव धर्मशास्त्र का मुकुट है।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा धर्मशास्त्र, या ईश्वर पर उनके शिक्षण का विषय है। यह सत्र 4 है, ट्रिनिटी, तीसरी शताब्दी, और ऑगस्टीन का परिचय पर ऐतिहासिक विचार।